सखी री आतम रोग

सखी री आतम रोग बुरो लग्यो, याको दारू ना मिले तबीब।
चौदे भवन में न पाइए, सो हुआ हाथ हबीब ।।

आत्म रोग कासों कहिए, जिन पीठ दई परआतम।
ऐ रोग क्यों ए ना मिटे, जो लों देखे ना मुख ब्रह्म।।

सो हबीब क्यों पाइए, कई कर कर थके उपाए।
सास्त्र देखे सब सब्द, तिन दुख दिया बताए।।

सखी तार्थें दुख प्यारो लग्यो, अंदर देखो विचार।
सो दुख कैसे छोड़िए, जासों पाइए पिउ मनुहार।।

महामत कहे इन दुख को, मोल ना कियो जाए।
लाख बेर सिर दीजिए, तो भी सर भर न आवे ताए।।